REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं अभिगम्यता एक भौगोलिक अध्ययन

सत्यनारायण नागर
शोधार्थी भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर (राज.)

सारांश

राजस्थान राज्य भारत में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान करने वाला पहला राज्य है। राज्य में पर्यटन के महत्व को समझते हुए वर्ष 1989 में युनूसखान समिति की सिफारिश पर इसे उद्योग का दर्जा प्रधान किया गया।[1] आधुनिक उद्योगों की भांति पर्यटन उद्योंग भी उभरता हुआ एक आर्थिक उद्योग है। राजस्थान राज्य दुनिया भर के पर्यटकों के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करता हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक इमारतें, विरासत स्थल, अनेको विविधताऐं, राज्य का रंग बिरंगा स्वरूप, सतरंगी संस्कृती, खान–पान और धार्मिक स्थालों में पर्यटन उद्योंग की असीम संभावना छुपी हुई है। वर्तमान में शिक्षा, चिकित्सा, एडवेंचर, ग्रामीण पर्यटन तथा इको– पर्यटन ने भी राज्य में पर्यटन उद्योंग को नए आयाम से उभारा है। राजस्थान में सिर्फ अन्तर्राष्ट्रीय ही नही बल्कि स्थानिय पर्यटकों ने भी पर्यटन उद्योंग को बढ़ावा दिया है। वर्ल्ड ट्रेवल ट्यूरिज्म कॉउन्सिल के अनुसार पर्यटन से विश्व में 292 मिलियन रोजगार के अवसर सृजित हुए है अर्थात प्रत्येक 10 में से 1 रोजगार पर्यटन से मिला हुआ है। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का योगदान 10.2 प्रतिशत है। वर्ष 2016 के आंकड़ों के अनुसार पर्यटन से देश में 40.3 मिलियन रोजगार सृजित हुए है जो कि कुल रोजगार का 9.3 प्रतिशत है। अतः राजस्थान में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं है।[2]

प्रस्तावनाः–

पर्यटन उद्योंग सार्वजनिक और बुनियादी ढ़ाँचे पर अत्यधिक निर्भर करता है। बिना परिवहन जाल, संसाधन, होटल संरचना, पर्यटकों का सम्मान एवं सूरक्षा के अभाव में पर्यटन उद्योंग कभी भी राज्य की अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका नही निभा सकता है। इसलिए परिवहन ढ़ाँचे का विकास अत्यन्त आवश्यक हैं। राजस्थान राज्य परिवहन संरचना की दृष्टि से विकास की ओर अग्रसर है। सुदृढ़ परिवहन ढ़ाँचा अन्तर्राष्ट्रीय तथा घरेलू पर्यटकों के पर्यटन स्थल तक पहुच के लिए तंत्रिका तंत्र का कार्य करता है। सघन परिवहन जाल संयोजकता पर्यटकों के लिए पर्यटन परितन्त्र तथा पर्यटन स्थलों के अनेक विकल्प बनाता है। फलस्वरूप परिवहन जाल का विकास पर्यटन उद्योंग में विदेशी मुद्रा अर्जीत करने में सहायक है। पर्यटन विभिन्न प्रकार के उद्योगों तथा अलग ही प्रकार के अनेक उद्योगों के लिये बाजार उपलब्ध कराता है। यह पाचँ क्रियाओं के समूह का सयुक्त रूप है –परिवहन, आवसीय सुविधा, भोजन, मनोरंजन एवं यात्रा सम्बन्धी सेवाएँ।[3] अतः परिवहन जाल का विकास पर्यटन केन्द्रों को मध्य में रख कर करना अत्यन्त आवश्यक है।

शोध पत्र में राजस्थान के प्रमुख पर्यटन केन्द्रों के मध्य परिवहन मार्ग जाल सू–सम्बंधता एवं पर्यटन केन्द्रों पर पर्यटकों की संख्या का विषलेश्ण कर इनके मध्य पाये गऐ सहसम्बंध को ज्ञात किया गया है, पर्यटन विकास एवं पर्यटन उद्योग से अधिक आय अर्जीत करने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार :–

राजस्थान राज्य भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में 23^0 3′ से 30^0 12′ उतरी अक्षांश तथा 69^0 30′ से 78^0 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।[4] राज्य की उत्तरी और उत्तर–पूर्वी सीमा पंजाब तथा हरियाणा से, पूर्वी सीमा उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश से, दक्षिणी–पूर्वी सीमा मध्यप्रदेश से तथा दक्षिणी और दक्षिणी–पश्चिमी सीमा क्रमशः मध्यप्रदेश तथा गुजरात से संयुक्त है। राज्य का क्षेत्रीय विस्तार 342239.74 वर्ग कि.मी. है। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान पूर्व में गंगा –यमूना नदियों के मैदान, दक्षिण में मालवा के पठार तथा उत्तर एवं उत्तर–पूर्वी में सतलज–व्यास नदियों के मैदान द्वारा घिरा हुआ है। राज्य में जनगणना सन् 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 685.48 लाख है।

उद्देश्य :–

1. राजस्थान में पर्यटन संख्या तथा पर्यटक परिपथों का क्षेत्रीय अध्ययन करना।
2. राज्य के परिवहन तन्त्र तथा पर्यटन स्थलों के मध्य मार्ग जाल सू– सम्बंधता को ज्ञात करना।
3. राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं परिवहन जाल संयोजकता के मध्य सम्बंधों की घनिष्टता को जानना।

शोध –प्रश्न :–

शोध कार्य में अध्ययन हेतु निम्न प्रश्न अभिगृहीत हैं।

4. राज्य के पर्यटन स्थलों में परिवहन जाल संयोजकता किस प्रकार से है ?
5. क्या राज्य में परिवहन जाल संयोजकता पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को प्रभावित करती है ?

शोध–प्रविधिया :–

शोध पत्र में विश्लेषण के लिए द्वितीयक आंकड़ों उपयोग में लिए गए हैं। आंकड़ों के विश्लेषण के लिय सांख्यिकीक विधिया (कार्ल पिर्यसन सम्बंध गुणांक विधि), दण्ड आरेख विधि, सारणीकरण विधि, ग्राफिक विधि तथा यातायात जाल विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

शोध– विश्लेषण :–

राजस्थान में पर्यटकों का प्रादेशिक विवरण :–

राजस्थान में वर्ष 2015 के अन्तर्गत जयपुर जिले 40.45 प्रतिशत के साथ विदेशी पर्यटकों के आगमन में प्रथम स्थान पर हैं। जबकि उदयपुर तथा जोधपुर राज्य के कुल पर्यटकों का क्रमशः 11.22 प्रतिशत व 8.59 प्रतिशत हिसा रखते है। स्वदेशी पर्यटकों का सर्वाधिक पसंधिदा स्थान क्रमशः अजमेर(12.92 प्रतिशत), पुष्कर(10. 76 प्रतिशत) तथा माउण्ट आबू(5.73 प्रतिशत)रहे है।

तालिका 1.2 **राजस्थान में पर्यटकों का प्रादेशिक विवरण** (2015)

क्र. सं.	पर्यटक स्थल	पर्यटकों की संख्या (2015)					
		स्वदेशी		विदेशी		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	माउण्ट आबू	2017636	5.73	1598	0.11	2019234	5.51
2	उदयपुर	727266	2.07	165525	11.22	892791	2.44
3	जयपुर	1201152	3.41	596756	40.45	1797908	4.90
4	पुष्कर	3786360	10.76	69494	4.71	3855854	10.52
5	जोधपुर	598967	1.70	126772	8.59	725739	1.98
6	अजमेर	4546300	12.92	36423	2.47	4582723	12.50
7	जैसलमेर	266175	0.76	84533	5.73	350708	0.96
8	नाथद्वारा	637722	1.81	10	0.00	637732	1.74

9	चित्तौड़गढ	640688	1.82	38879	2.64	679567	1.85
10	भरतपुर	66322	0.19	39608	2.68	105930	0.29
11	बीकानेर	348772	0.99	60767	4.12	409539	1.12
12	रणकपुर	532039	1.51	102994	6.98	635033	1.73
13	कोटा	90598	0.26	2574	0.17	93172	0.25
14	सवाई माधोपुर	85200	0.24	67935	4.60	153135	0.42
15	झुन्झुनू	86555	0.25	37420	2.54	123975	0.34
16	बांसवाड़ा	113410	0.32	82	0.01	113492	0.31
17	अलवर	95787	0.27	10634	0.72	106421	0.29
18	सरिस्का	14487	0.04	150	0.01	14637	0.04
19	ऋषभदेव	25800	0.07	0	0.00	25800	0.07
20	बून्दी	54574	0.16	15290	1.04	69864	0.19
21	सीकर	48305	0.14	16	0.00	48321	0.13
22	सिलीसेढ	2071	0.01	0	0.00	2071	0.01
23	बहरोड़	3650	0.01	31	0.00	3681	0.01
24	झालावाड़	92426	0.26	114	0.01	92540	0.25
25	अन्य	19105311	54.30	17706	1.20	19123017	52.16
	योग	35187573	100.00	1475311	100.00	36662884	100.00

स्त्रोत : WWW. Rajasthan tourism.gov.in

आरेख 1.2 राजस्थान में पर्यटकों का प्रादेशिक विवरण (2015)

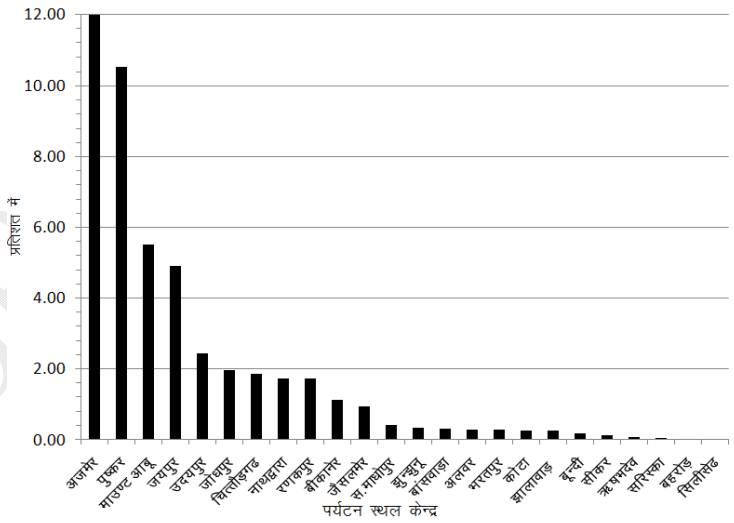

स्त्रोत : WWW. Rajasthan tourism.gov.in

राजस्थान में परिवहन तन्त्रः–

आधुनिक समय में परिवहन तन्त्र की बढती जटीलता एवं साधनों की संख्या में वृद्धि किसी भी क्षेत्र के आर्थिक समृद्धि का सूचक हैं। यातायात का विकास, पर्यटन की बुनियादी संरचना से संबंधित एक प्रमुख पहलु

है। यह एक प्राथमिक पर्यटन सेवा है। पर्यटन स्थलों की एक विशेषता यह होनी चाहिए वहॉ तक आसानी से पहुंच सकें। इसके तहत परिवहन द्वारा पहुँच शामिल है। इस अभिगम्यता के कारण ब्रिटेन एवं पिश्चिमी यूरोप पर्यटन स्थलों हेतु लिए समुन्नत एवं महतवपूर्ण क्षेत्र है।[5] राजस्थान जैसे ऐतिहासिक विरासत, संस्कृतिक विविध एवं प्राचिन सभ्यताओं वाले प्रदेश में परिवहन के संसाधन तथा पर्यटन केन्द्रों के मध्य संयोजकता पर्यटन उद्योग की आधारभूत आवश्यक्ताओं में प्रातमिक जरूरत हैं। वर्ष 2015 में राजस्थान में 3.66 करोड़ पर्यटकों के साथ 14. 75 लाख विदेशी तथा 5.9 प्रतिशत वृद्धि दर्ज हुई। इस वृद्धि का श्रेय पर्यटन विभाग राजस्थान व राजस्थान सरकार द्वारा किया गया परिवहन सुविधाओं में प्रयास रहा है।[6]

राज्य में अधिक एवं अच्छी परिवहन सुविधाओं के विकास होने पर ही आज राजस्थान पर्यटन उद्योग अपनी स्थिति विश्व मानचित्र में रख पाया हैं। राजस्थान में सड़क, रेल व वायु मार्ग तीनों ही हैं किन्तु राज्य की विशालता को देखते हुए सभी मार्गों की लम्बाई बहुत ही कम, अतः इनके विकास की आवश्यकता स्पष्ट दृ ष्टिगोचर होती हैं। राजस्थान में प्रमूख परिवहन के साधनों के रूप में सड़कें व रेलमार्ग हैं। राज्य में वर्तमान में रेलों की लम्बाई 5784.16 किमी. और सड़कों की लम्बई 192551 किमी. हैं। राज्य में सड़कों की लम्बई प्रति 100 वर्ग किमी. में 56.00 किमी. हैं जो कि राष्ट्रीय औसत 125.00 किमी. से बहुत कम है। राज्य में वर्तमान में प्रति हजार वर्ग किमी. क्षेत्रफल में रेलमार्ग की औसत लम्बाई 16.90 किमी. हैं। राजस्थान में प्रमुख पर्यटन मार्ग के अन्तर्गत राजस्थान मार्ग, हवामहल मार्ग, मेवाड मार्ग तथा मरूस्थली मार्ग सम्मिलित है, जो राज्य के मुख्य पर्यटन केन्द्रों को आपस में जोड ते है। अतः यातायात एवं संचार सुविधाऐं ही पर्यटन उद्योग की रीढ़ है।[7]

तालिका 1.3 राजस्थान में यातायात सू–सम्बंधत सूची(Connectivity Matrix)

पर्यटन स्थल	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	TOTAL
A	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
B	1	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	5
C	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	1	0	8
D	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
E	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
F	0	1	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	6
G	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
H	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
I	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
J	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
K	1	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
L	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	2
M	0	0	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
N	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1
O	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
P	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	2
Q	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1
R	0	0	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
S	0	0	1	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	3
T	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
U	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1

पर्यटन स्थल (माउण्टआबू–,उदयपुर–A, भरतपुर–B, जयपुर–C, पुष्कर–D, जोधपुर–E, अजमेर–F, जैसलमेर–G, चित्तौड़गढ–H, भरतपुर–I, बीकानेर–J, रणकपुर–K, कोटा–L, सवाई माधोपुर–M, झुन्झुनू–N, बांसवाड़ा–O, अलवर–P, सरिस्का–Q, बून्दी–R, सीकर–S, बहरोड़–T तथा झालावाड़–U)

स्त्रोत : शोधार्थी द्वारा

मानचित्र नं. 1 राजस्थान में पर्यटन केन्द्रों के मध्य प्लानर नेटवर्क

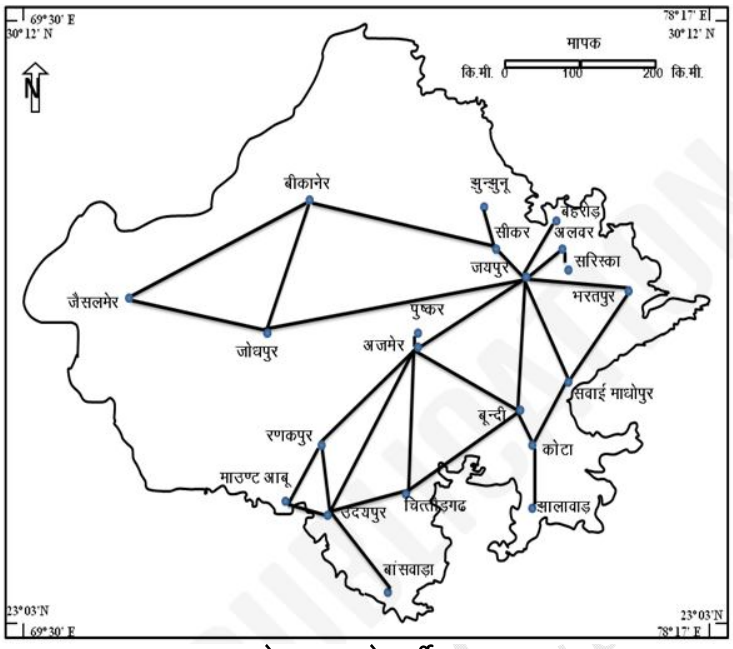

स्त्रोत : शोधार्थी द्वारा

सह–सम्बन्धः–

प्रदर्शित समयंक के आधार पर सहसंबंध गुणांक की गणना कि गई है। सह –सम्बन्ध परिमाण के निर्वचन की तालिका निम्न हैं :–

तालिका 1.4 सह –सम्बन्ध परिमाण

परिभाषा	धनात्मक	ऋणात्मक
अनुपस्थिति	0	0
पूर्ण	+1	–1
उच्च	+.75 और +1 के बीच	–.75 और –1 के बीच
मध्यय	+.25 और +.75 के बीच	–.25 और –.75 के बीच
अल्प	+ .25 और 0 के बीच	–.25 और 0 के बीच

तालिका 1.5 सह –सम्बन्ध : सू–सम्बन्धता का मान (X) एवं पर्यटकों की संख्या प्रतिशत (Y)

पर्यटन स्थल	श्रेणी X			श्रेणी Y		
	मूल्य	विचलन	विचलन वर्ग	मूल्य		कोटि
	x	dx	dx^2	Y	dy	dy^2
माउण्ट आबू	2	-0.67	0.44	0.11	-4.60	21.13
उदयपुर	5	2.33	5.44	11.22	6.51	42.44
जयपुर	8	5.33	28.44	40.45	35.74	1277.69
पुष्कर	1	-1.67	2.78	4.71	0.01	0.00
जोधपुर	3	0.33	0.11	8.59	3.89	15.12
अजमेर	6	3.33	11.11	2.47	-2.24	5.00

जैसलमेर	2	-0.67	0.44	5.73	1.03	1.05
चित्तौड़गढ	3	0.33	0.11	2.64	-2.07	4.28
भरतपुर	1	-1.67	2.78	2.68	-2.02	4.08
बीकानेर	3	0.33	0.11	4.12	-0.59	0.34
रणकपुर	3	0.33	0.11	6.98	2.28	5.18
कोटा	2	-0.67	0.44	0.17	-4.53	20.52
सवाई माधोपुर	3	0.33	0.11	4.60	-0.10	0.01
झुन्झुनू	1	-1.67	2.78	2.54	-2.17	4.70
बांसवाड़ा	1	-1.67	2.78	0.01	-4.70	22.08
अलवर	2	-0.67	0.44	0.72	-3.98	15.87
सरिस्का	1	-1.67	2.78	0.01	-4.69	22.04
बून्दी	4	1.33	1.78	1.04	-3.67	13.46
सीकर	3	0.33	0.11	0.00	-4.70	22.13
बहरोड़	1	-1.67	2.78	0.00	-4.70	22.11
झालावाड़	1	-1.67	2.78	0.01	-4.70	22.06
	56		68.67	98.80		1541.31

स्त्रोत : शोधार्थी द्वारा

गणना से प्राप्त गुणांक – 0.74 है जोंकि पर्यटकों की संख्या एवं परिवहन जाल संयोजकता के बीच में धनात्मक मध्यय सहसम्बन्ध व्यक्त करता है।

सारांश :–

1) राज्य के पर्यटन स्थलों में परिवहन जाल संयोजकता किस प्रकार से है ?

राजस्थान को प्रमुख पर्यटन केन्द्रों के मध्य सूसम्बधता सूची के आधार पर तीन स्तरों में विभगत किया गया है– अधिक सूसम्बधता, मध्य सूसम्बधता तथा निम्न सूसम्बधता । राज्य के पश्चिमी पर्यटन केंद्रों के मध्य सूसम्बधता जैसलमेर में 1 तथा बीकानेर व जोधपुर में 3 है। वही दूसरी ओर मध्यवृति प्रदेश अजमेर में 6 है। दक्षिणी–पूर्वी पठारी प्रदेश कोटा, बून्दी तथा बांसवाड़ा में सूसम्बधता क्रमशः 1, 3 व 1 मान रखती है। दक्षिण के पर्वतिय प्रदेश में सर्वाधिक मान उदयपुर (5) का है। अन्य में रणकपुर 3 तथा माउण्ट आबू 2 सूसम्बधता मान रखता है।

तालिका 1.6 राजस्थान को प्रमुख पर्यटन केन्दों के मध्य सूसम्बधता

क्र. स.	स्तर	मान	पर्यटन स्थल
1.	अधिक सूसम्बधता	6 व अधिक	जयपुर, अजमेर
2.	मध्य सूसम्बधता	3 व 6 के मध्य	उदयपुर, जोधपुर, चित्तौड़गढ, बीकानेर, रणकपुर, सवाई माधोपुर, बून्दी, सीकर
3.	निम्न सूसम्बधता	3 से कम	माउण्ट आबू, पुष्कर, जैसलमेर, भरतपुर, कोटा, झुन्झुनू, बांसवाड़ा, अलवर, सरिस्का, बहरोड, झालावाड

स्त्रोत : शोधार्थी द्वारा

2) क्या राज्य में परिवहन जाल संयोजकता पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को प्रभावित करती है ?

राज्य में परिवहन जाल संयोजकता पर्यटन स्थलों को प्रभावित कर रही हैं। जयपुर का संयोजक मान 8 तथा उदेयपुर का संयोजक मान 5 है एवं इनमे आने वाले पर्यटकों का प्रतिशत क्रमशः 40.45 व 11.22 है। आरेख 1.2 तथा गणना से प्राप्त गुणांक – 0.74 से स्पष्ट होता है कि **पर्यटकों की संख्या चर एवं परिवहन जाल संयोजकता के मध्य में धनात्मक मध्यय सहसम्बन्ध है।**

सुझाव :–

- गांवों में देशी तथा विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मुख्य मार्ग से पहुंच मार्ग तक जोड़ने और उन्हें पर्यटन मानचित्र पर दर्शाने की आवश्यक्ता हैं।
- परिवहन विभाग द्वारा परिवहन मार्गों से सम्बांधित समस्याओं की एक विस्तृत श्रंखला बनाई जाय। इस कार्य के लिए समय – समय पर सर्वेक्षण किया चाहिऐ।
- सूचना प्रौद्दोगिकी का प्रयोग करना चाहिए ताकि ट्रैफिक प्रवाह और व्यक्तिगत वाहन उपयोग पर बेहतर जानकारी और नियंत्रण उपलब्ध हो सके। इस कार्य के लिए सूचना प्रौद्दोगिकी के साथ रिमोट सेंसिंग तकनीकि का प्रयोग राजस्थान सरकार द्वारा किया जायें।
- विदेशी पर्यटकों को भारतीय परिवार के साथ रहने के अवसर उपलब्ध हो साथ – साथा प्राकृतिक आवासों में भी वृद्वि हो।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बेड व ब्रेक फास्ट होम स्टे की व्यवस्था तथा फिल्म पर्यटन के क्षेत्र में वृद्वि।
- शिल्प, वस्त्र, कला, हथकरघा, लोक संस्कृति, लोकशिल्प, लोक जीवनशौली तथा लोक व्यवहार को आधुनिक बनाकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभारना।

संदर्भ सूची

1. हंसराज काजला (2018),सीकर जिले में पर्यटन विकास एवं संभावनाए, ऐसेन्ट इन्टरनेशनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, VOL.-lll (मार्च–अप्रैल) पृ.–62.1.
2. डॉ. भरत पारीक (2017), राजस्थान के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग का महत्व, ऐसेन्ट इन्टरनेशनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, VOL.-ll (अक्टूबर–दिसम्बर) पृ.–45.4.
3. डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल (2016), पर्यटन सिद्धान्त एवं यात्रा प्रबन्धन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृ.–6.
4. डॉ. हरि मोहन सक्सेना (2018), राजस्थान को भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.–6.
5. डॉ. विमल कुमार कपूर (2009), पर्यटन भूगोल, विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ पृ. 27–35.
6. बाबू लाल मीणा, श्रवण कुमार मीणा (2017),राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं आर्थिक विकास में योगदान, ऐसेन्ट इन्टरनेशनल जर्नल फोर रिसर्च ऐनालायसिस, VOL.-lll (मार्च–अप्रैल) पृ.–17.5.
7. डॉ. जे. के. शर्मा (2017), प्रगतिशील राजस्थान को भूगोल, आस्था प्रकाशन, जयपुर, पृ पृ. 631–643.

सत्यनारायण नागर
शोधार्थी भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय , जयपुर (राज.)